IJCRT.ORG ISSN : 2320-2882

INTERNATIONAL JOURNAL OF CREATIVE RESEARCH THOUGHTS (IJCRT)

An International Open Access, Peer-reviewed, Refereed Journal

वर्तमान में मानव-मूल्यों की स्थिति और गुरु जाम्भोजी

डॉ० सीमा शर्मा
जानकी देवी मेमोरियल
कॉलेज दिल्ली विश्वविद्यालय
दिल्ली

भारतीय संस्कृति अपने अमूल्य मूल्य बोध पर आधारित है। मानक हिन्दी कोश के अनुसार मूल्य का अर्थ हैए ष्वह गुण या तत्व जिसके आधार पर किसी का महत्व या मान होता है। साहित्य शासन में श्सत्यम्ए शिवम्ए सुन्दरम्श तीनों मूल्यों की बात की गई। मानवीय मूल्य वे मानवीय मान लक्ष्य या आदर्श है जिनके आधार पर विभिन्न मानवीय परिस्थितियाँ तथा अमानवीय परिस्थितियों में मानव का अपना व्यवहार तय होता है। वे मानव मूल्य के लिए विशिष्ट अर्थ रखते हैं और उन्हें व्यक्ति अपने सामाजिक जीवन के लिए महत्वपूर्ण समझते हैं।ष मानव समुदाय में ही नहीं रहता बल्कि अपने बौद्धिक अनुभवों के आधार पर वह अपने जीवन मूल्य तय करता चलता है। मनुष्य सृष्टि के सभी प्राणियों में श्रेष्ठ है इसलिए उसकी आवश्यकताएं और दायित्व बोध भी अधिक है। मानव को सुव्यवस्थित सामाजिक व्यवहार प्रदान करने के लिए सामाजिकता की भावना पर बल दिया गया। इसीलिए समाज के उत्थान में ही व्यक्ति का उत्थान निहित माना गया।

सर्वे भवन्तु सुखिनः सर्वे सन्तु निरामयाः।
सर्वे भद्राणि पश्यंतु माकश्चिदुः खमाद्भ्वेत्।।

सभ्य समाज की परिकल्पना तभी की जा सकती है जब उसकी मूल्य बोध की अवधारणा सशक्त हो। समाज का प्रत्येक व्यक्ति सभ्यता की नींव को सुदृढ़ रखने में अपनी सहभागिता निभाये यह वह मार्ग है जो मनुष्य को अंधकार से प्रकाश की ओर ले जाता है तथा उच्च मानवीय मूल्यों की स्थापना करता है।

असतो मा सद्गमय
तमसो मा ज्योतिर्गमय
मृत्योर्मा अमृतंगमय।

भारतीय संस्कृति में मानवीय मूल्य इतने अधिक महत्वपूर्ण हैं कि श्धर्मश की परिभाषा बाह्याडम्बर नहीं बल्कि श्धारयति इति धर्मःश है यानि जो धारण किया जा सके वह धर्म है। इसीलिए मूल्य हमारे यहाँ व्यर्थ का कर्मकांड न होकर मन तथा सम्पूर्ण निष्ठा से धारण करने वाला कर्तव्यबोध है। इसीलिए बाह्याडम्बरों के स्थान पर श्मनसा वाचा कर्मणाश भक्ति की स्थापना की गयी। श्मनसा वाचा क्रमनां कलि केवल नांव अधार।श ;नामदेव)। मनुष्य के मन पर प्रलोभनए आत्मप्रशंसा पाने का मोहए अहंकारए क्रोधए स्वयं को श्रेष्ठ दिखाने की होड़ में दूसरों को नीचा

दिखाने की भावना नकारात्मक प्रभाव छोड़ती है। यदि मनुष्य अपने आचरण (मनए वचन और कर्म) में निष्ठावान है तो उसमें सात्विकता और उच्च मानवीय गुणों का विकास होता है। धर्मवीर भारती अपनी पुस्तक श्मानव मूल्य और साहित्यश में लिखते हैं ब्जब हम मानव-मूल्य की बात करते हैं तो हमारा तात्पर्य क्या हैए यह समझ लेना आवश्यक है। अपनी परिस्थितियाँ इतिहास-क्रम और काल-प्रवाह के सन्दर्भ में मनुष्य की स्थिति क्या है꠰ और महत्व क्या है꠰ वास्तविक समस्या इस बिन्दु से उठती है।ष् जब परिवार और समाज की संकल्पना सामने आयी तब उसकी व्यवस्था और उस व्यवस्था के नियंत्रण भी अनिवार्य हो गये। समाज को सुचारू रूप से चलाने के लिए एकजुटता और समानता की भावना पर बल दिया गया। इसलिए श्रामराज्यश की कल्पना की गयी। एक ऐसा राज्य जहाँ शेर और बकरी एक ही घाट पर पानी पीते हैं यानी समाज के सशक्त वर्ग और समाज के कमजोर वर्ग को समान अधिकार और अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता दी गयी। राजा को ईश्वर के समान समदृष्टा माना गया जो सभी के साथ एक समान व्यवहार करता हैए जिसकी नीतियाँ शक्तिवान ओर कमजोर को देखकर परिवर्तित नहीं होती।

मुखिया मुख सो चाहिएए खान-पान को एक।
पाले-पोसे सकल अंगए तुलसी सहित विवेक।

धर्म के अन्तर्गत भक्ति और सेवा को महत्व दिया गया। श्सेवाश की परिभाषा के दायरे में न केवल मनुष्य आता था बल्कि समस्त सृष्टि ही समाहित हो जाती थी। मानवीय मूल्यों के अन्तर्गत जहाँ धर्म अर्थए कामए मोक्ष की प्राप्ति का चरम रखा गया वहीं श्विश्व बन्धुत्वश की भावना को महत्व दिया गया। स्वयं कष्ट उठाकर दूसरों की सहायता करने पर बल दिया गया। जब श्वसुधैव कुटुम्बकम्श की अवधारणा हमारे समक्ष आती है तो उसमें मनुष्यए पशु-पक्षी सभी का अपना विशिष्ट स्थान हैए प्रत्यक्ष जीवंत सत्ता है। इसी प्रकार श्अतिथि देवो भवःश तथा शरणागत वत्सलता की भावना है श्साईं इतना दीजिए जामे कुटुम समाय मैं भी भूखा न रहूँ साधु न भूखा जाय।श अपने से कमजोर के प्रति प्रेम और शरणागत के प्रति दया-कोमलता की भावना के उच्च मानवीय मूल्य स्थापित किए गए। यहाँ तक कि कहा गया कि स्वयं कष्ट उठाकर भी सभीत शरणागत की रक्षा करें। सुन्दरकाण्ड में तुलसीदास लिखते हैं श्सखा नीति तुम्ह नीकि विचारी। मम पन सरनागत भयहारी। जौं सभीत आवा सरनाई। रखिहऊँ ताहि प्रान की नाई।।श

भारतीय संस्कृति में गुरुभक्ति और मित्र पर दृढ़ विश्वास रखने के मानवीय मूल्य की स्थापना भी की गयी है। गुरु वह है जो हमें अंधकार से प्रकाश की ओर ले जाता है। ष्श्गुश शब्दस्तु अंधकाराए श्रुश तु रुणद्धि वाचकाःष् इसलिए गुरु ईश्वर से भी अधिक महत्वपूर्ण है। ईश्वर प्राप्ति का मार्ग गुरु के दिखाये गये प्रकाशपूर्ण निर्देश की ओर से ही होकर जाता है श्गुरु गोविंद दोऊ खड़ेए काके लागू पांयए बलिहारी गुरु आपने गोविंद दियो बताय।श

श्मित्रश वह है जो हमें जटिल से जटिल परिस्थितियों में भी बिना किसी प्रलोभन और अपेक्षा के बाहर निकाल लाता है। इसीलिए सच्चे मित्र का साथ होना मनुष्य के जीवन की बहुत बड़ी उपलब्धि है। तुलसीदास लिखते हैं कि श्आपत् काल परखिये चारीए धीरज धर्मए मित्र अरु नारी।श

जब मनुष्य पर विपत्ति का दौर आता है उसी समय व्यक्ति के धैर्यए धर्मए मित्र और पत्नी की परख होती है। यदि मनुष्य के पास ये चारों अपने सत्य और निष्ठा के साथ मौजूद हैं तो वह बड़ी सरलता से बड़ी-बड़ी कठिनाईयों से मुक्ति पा लेता है।

भारतीय सांस्कृतिक मूल्य चिंतन में अहिंसा सहिष्णुता की बात की गयी। अहिंसा वह है जो न केवल मनुष्य के प्रति की जाए बल्कि उसके दायरे में पशु-पक्षीए वृक्ष आदि समस्य प्रकृति आती है। क्योंकि जिसे जड़ प्रकृति

माना गया हमारे यहाँ वह भी जीवंत हो उठती है। सूरदास के काव्य में दर्शाया गया है कि कृष्ण की पालित गायों के विविध नाम हैं और उनका स्वतंत्र अस्तित्व है वे मानवीय सुख-दुःख से सरोकार रखती हैं। कृष्ण के नित्यधाम वृन्दावन के लिए कहा गया श्जहाँ सदा बसंत का वास रहा हैय जहाँ सदा हर्ष रहता हैए कभी उदासी नहीं छातीय जहाँ सदैव कोकिल कीर शोर करते हैंय जहाँ सदा मन्मथरूप चित्त चुराते हैंय वहीं हरि के साथ अनेक सखियाँ बिहार करती हैं।श

संयम और क्रोध का परित्याग और क्षमा दान की स्थापना भी भारतीय मूल्य बोध करते हैं। मनुष्य का स्वयं पर संयम बहुत अनिवार्य है। भोग से लेकर योग तक सभी में संयम की स्थापना दिखाई पड़ती है। वाणी के संयम की बात की गयी कि हमें श्सत्य वदंए प्रिय वदंश होना चाहिए। अर्थात् सत्य बोलना चाहिए और वह औरों को प्रिय भी होना चाहिए। श्ऐसी बानी बोलिये मन का आपा खोयए औरन को सीतल करे आपहु सीतल होयश

मितभाषिता और आवश्यकता पड़ने पर श्मौनश को भी मनुष्य की आंतरिक शक्तियों में सम्मिलित किया गया। मनुष्य के लिए क्रोध का परित्याग करने तथा क्षमा करने को महिमा मंडित किया गया। क्षमा के महत्व को देखते हुए श्क्षमावाणी पर्वश मनाया गया। क्रोध मनुष्य की चेतना और विवके को नष्ट कर डालता है। अक्सर क्रोध के आवेग में वह ऐसा कर डालता है जिसका उसे बाद में पछतावा होता हैए लेकिन पूर्व में किया गया कृष्य फिर वापस नहीं आता। इसलिए मनुष्य के आत्मसंयम पर बल दिया गया। आत्मसंयम की स्थापना के लिए संतोष को भी महत्व दिया गया। श्जब आवै संतोष धनए सबधन धूरि समानश यह इसलिए भी आवश्यक हो जाता है क्योंकि इसमें गला काट अन्धी प्रतिस्पद्र्धा के लिए कोई स्थान नहीं बचता। स्वयं को श्रेष्ठ सिद्ध करने के लिए दूसरों का स्थान गिराने की नीचता को कोई अवसर नहीं मिलता। भारतीय मूल्यबोध सभी को साथ लेकर उन्नति करने पर बल देता है।

अपने से वरिष्ठों को आदर और सम्मान देना तथा उनकी सेवा करना तथा छोटों के प्रति प्रेम भावए कृपा-दृष्टि रखना भारतीय मूल्य बोध की एक अन्य विशिष्टता है। मनुष्य को अवसर पड़ने पर बड़े से बड़ा त्याग गरने के लिए भी सदैव तत्पर रहना चाहिए राम माँ की आज्ञा से वैभवशाली साम्राज्य का पल भर में त्याग कर देते हैंए भरत भी उस साम्राज्य के वैभव का त्याग का आदर्श सामने रख कर स्वयं को राजा नहीं बल्कि सेवक के रूप में प्रस्तुत करते है। सिद्धार्थ घर और राज्य का त्याग करके बुद्ध के रूप में स्थापित हुए। अशोक हिंसा का त्याग कर महान बने। हरिश्चन्द्र ने अपने सत्य की रक्षा के लिए सहजता से सहर्ष राज्य त्याग कर दिया।

इसी प्रकार यदि कोई हमारे साथ दयाए त्यागए सज्जनता दर्शाता है तो हमें भी उसके प्रति कृतज्ञता का ज्ञापन करना चाहिए। इसमें मनुष्य की विनम्रता सदैव बनी रहती है।

सम्पूर्ण भक्ति आंदोलन उसकी विभिन्न विचारधाराएं उच्च मानवीय मूल्यों की स्थापना करती हैं। चाहे वह निर्गुण भक्ति काव्य होए सगुण भक्ति काव्य हो अथवा सूफी काव्य हो सभी मानवीय मूल्यों के चरम-विकास पर प्रकाश डालते हैं। भक्ति साहित्य का उदय सर्वप्रथम दक्षिण भारत में हुआ। 13वीं-19वीं सदी में भक्ति परम्परा ने अखिल भारतीय भक्ति आंदोलन के रूप में विकसित हुई। संपूर्ण भक्ति आंदोलन मानवीय मूल्यों और मानवतावाद की स्थापना करता हुआ दिखाई पड़ता है। उस समय भारत राजनीतिक स्तर पर मुहम्मद तुगलक के मूर्खतापूर्ण कृत्यए तैमूर का नृशंस व्यवहारए रिवज खाँ से हुमायूँ के शासन काल की शोचनीय दशा को क्षेल रहा था। भक्ति काल का विस्तार तुगलक वंश से शाहजहाँ तक का है। आम जनता युद्ध की विभीषिका और सेना के अत्याचार सह रही थी। सर्वत्र ठगोंए चोरों और डाकुओं का बोलबाला था। लूटमार की घटनाओं के कारण राजनीतिक सुरक्षा का अभाव था। शासन-सत्ता हिन्दुओं और मुसलमानों के प्रति भेदभाव रखती थीए बेगार प्रथा प्रचलित थी

व परिश्रम का उचित पारिश्रमिक भी नहीं मिलता था। एक ओर जनता राजनीतिक उत्पीड़न से त्रस्त थी तो दूसरी ओर राजभवन विलासिता में डूबा हुआ था।

भक्तियुगीन सामाजिक परिस्थितियाँ भी आम जनता के लिए विपरीत थी। दुर्भिक्ष एवं महामारी की घटनाएँ आम थीं। प्राकृतिक आपदाओं से निपटने के लिए समाज पूरी तरह से ईश्वर की दया पर निर्भर था। प्रायः जनता अशिक्षा एवं अन्धविश्वासों में जकड़ी हुई थी। श्पीरोंश और श्ज्योतिषियोंश के बाह्याडम्बर समाज में फैले हुए थे। मनुष्यों की बलि देकर अज्ञान शक्तियों को प्रसन्न किया जाता था। मुगलों के शासन के बारे में फेल्सपार्ट नामक लेखक ने लिखा है ष्उस समय समाज के भीतर तीन वर्ग- श्रमिकए नौकर और दुकानदार थेए जिन्हें न तो कोई स्वेच्छापूर्वक कार्य करने का अवकाश था और न यथेष्ट ही कोई पारिश्रमिक मिलता था। दुकानदार को अपनी चीजें छिपानी पड़ती थीं कि कहीं क्रूर कर्मचारियों की दृष्टि न पड़ जाए।ष

तत्कालीन समाज में आत्मगौरव की भावना नहीं थी वह सर्वत्र दीन-हीन विवश सा खड़ा था। सभी भक्तियुगीन कवियों और साधकों ने मनुष्य को इसी दीनता से बाहर निकालकर आत्मगौरव की शिक्षा दी।

ना जाने साहिब तेराए कैसा है।
मसजिद भीतर मुल्ला पुकारैए क्या साहिब तेरा बहिरा हैध्
चेउंटी के पग नेबर बाजेए सो भी साहब सुनता है।
पंडित होय के आसन मारैए लम्बी माला जपता है।
अन्दर तेरे कपट कतरनीए सो भी साहब लखता है।

यह वह समय था जब समाज का आधा भाग स्त्री वर्ग सर्वाधिक उत्पीड़ित था। बार-बार के सैन्य आक्रमणों का सहज शिकार स्त्री बन जाती थी। उसकी अस्मिता पर बार-बार प्रहार हुए अथवा सुरक्षा के नाम पर उसे असूर्यपश्या बना दिया गया। दोनों ही परिस्थितियों में उसके अस्तित्व को बुरी तरह कुचला गया। तुलसीदास नारी की इसी पराधीनता की पीड़ा के विषय में लिखते हैं ष्कत विधि सृजी नारी जगमांहीए पराधीन सपनेहूं सुख नाहीं।ष मीरा स्त्री के इसी अस्तित्व के लिए संघर्ष करती दिखाई पड़ती हैं ष्संतन ढिंग बैठि बैठि लोक-लाज खोईए चूनरी के किये टूकए ओढ़ि लीन्हीं लोई।ष सदियों से परिवार की प्रतिष्ठाए मर्यादा का यह दायित्व जो अकेले स्त्री पर लाद दिया गया उसने उसे उतार फेंका क्योंकि ये सभी नियम एकतरफा थे।

आज हम भौतिकवादी मशीनी युग में जी रहे हैं। यह जगत् विज्ञान का जगत् हैए जहाँ हम मंगल पर जीवन की खोज कर रहे हैं। वर्तमान समय विज्ञान की भौतिक उपलब्धियों से परिपूर्ण हैए परन्तु मानवीय मूल्यों का सर्वत्र ह्रास हो रहा है। भक्ति युग में जो मानवीय मूल्य स्थापित किये गये थेए वे भोगवादी संस्कृति की चकाचैंध में विस्मृत कर दिये गये हैं। भोगवादी संस्कृति में लिप्त मनुष्य का चारित्रिक पतन हो रहा है। मानव अंतहीन इच्छाओं के भंवर में फंसता जा रहा है। जीवन की मूलभूमत आवश्यकताओं (रोटीए कपड़ाए मकानए दवाए शिक्षा) के अतिरिक्त लालच भी जरूरत की तरह लगता है - ज्यादा चीजेंए कई तरह की चीजेंए रिश्तेदारए पड़ोसी से बेहतर चीजेंए जिन्हें पाने की लालसा में या पाने के पश्चात् हम एक-दूसरे को नीचा दिखाने से भी बाज नहीं आते। मैक्स न्यूयार्क लाइफ इंश्योरेंस का प्रचार वाक्य है- श्करो ज्यादा का इरादाश कितना ज्यादाए कब तक और कहाँ तकध् सर्वत्र अंधी प्रतिस्पद्र्धा है। स्त्री-पुरूष सम्बन्धों में स्वच्छन्दता स्पष्ट परिलक्षित हो रही है। संयुक्त परिवार बिखर रहे हैं और पारिवारिक मूल्यों का नैतिक पतन हो रहा है। रिश्तों का बाजारीकरण हो गया है। परिवार का वयोवृद्ध सदस्य वृद्धाश्रम में पहुँच जाता है और नारी श्देहश तक सिमट कर रह गयी हैए जिसका कार्य सिर्फ और सिर्फ आकर्षित करना है। ऐसे दूषित परिवेश में न केवल नारी अस्मिता पर लगातार हमले हो

रहे हैं बल्कि नन्हा मासूम बचपन भी वहशत का शिकार हो रहा है। यह मानवीय मूल्यों का ह्रास का दौर है और मानवता लगातार शर्मिंदा हो रही है। ऐसे समय में भक्तियुगीन मानवतावाद पुनः प्रासंगिक हो उठता है।

15वीं सदी में गुरु जंभेश्वर महाराज ने बिश्नोई पंथ की स्थापना की। बिश्नोई पंथ ने मानव कल्याण और मानवीय मूल्यों की पुरजोर स्थापना की। अनेक बाह्याडम्बरों का विरोध कर समानता त्यागए दयाए क्रोध का परित्यागए क्षमाए संयम आदि सभी उच्च मानवीय मूल्यों पर बल दिया। समाज में व्याप्त चोरीए निंदाए झूठए पाखंडए ईष्र्या एवं नशा आदि प्रवृत्तियों को समाप्त करके सत्यए ईमानदारीए अहिंसाए न्यायए परोपकारए दया आदि गुणों को स्थापित किया। इन्हीं मानवीय गुणों के कारण बिश्नोई पंथ ने अपनी एक अलग विशिष्ट पहचान बनाई।

बिश्नोई पंथ ने अपने 29 नियम प्रस्तुत किये जो वस्तुतः उनकी आचार संहिता है।

1ỏ तीस दिन तक जच्चा घर का कोई काम न करे।

2ỏ पाँच दिन तक रजस्वला स्त्री घर के कार्यों से अलग रहे।

3ỏ प्रातःकाल स्नान करें।

4ỏ शील का पालन करें।

5ỏ सन्तोष धारण करें।

6ỏ बाहरी एवं आन्तरिक पवित्रता रखें।

7ỏ प्रातः सांय सन्ध्या वन्दना करें।

8ỏ सन्ध्या को आरती और हरि गुण गान करें।

9ỏ प्रेमपूर्वक हवन करें।

10ỏ पानीए वाणीए ईंधन एवं दूध को छान कर प्रयोग करें।

11ỏ क्षमावान रहें तथा हृदय में दया धारण करें।

12ỏ चोरी न करें।

13ỏ निंदा न करें।

14ỏ झूठ न बोलें।

15ỏ वाद-विवाद न करें।

16ỏ अमावस्या का व्रत रखें।

17ỏ विष्णु का जप करें।

18ỏ प्राणी मात्र पर दया करें।

19ỏ हरा वृक्ष न काटें।

20ỏ कामए क्रोधए मद लोभ एवं मोह आदि को अपने वश में रखें।

21ण रसोई अपने हाथों से बनाएं।

22ण भाट अमर रखें।

23ण बैल को खसी (नपुंसक) न करवायें।

24ण अमल न खायें।

25ण तम्बाकू का प्रयोग न करें।

26ण भांग न पीवें।

27ण मांस न खावें।

28ण मदिरा न पीवें।

29ण नीले वस्त्र का प्रयोग न करें।

बिश्नोई पंथ द्वारा निर्धारित ये नियम मुख्यतः मानवतावाद तथा उच्च मानवीय मूल्यों की स्थापना ही है जिसमें मनुष्य के आचार-व्यवहारए आचरण सम्बन्धीए कुप्रवृत्तियों से बचने का परामर्श तथा दया (मनुष्योंए पशुओं और प्रकृति के प्रति)ए क्षमाए त्यागए अपना कार्य स्वयं करना तथा स्वच्छताए शुद्धता तथा पर्यावरण संरक्षण पर बल दिया गया है। साथ हीए स्त्रियों के स्वास्थ्य और सुरक्षा सम्बन्धी भी स्पष्ट निर्देश दिये गये हैं।

गुरु जाम्भोजी ने हिंसा का विरोध कर अहिंसा की स्थापना की थी। वाद में महात्मा गांधी ने भीए उसी अहिंसा के सिद्धांत को अपनाया।

जाम्भोजी ने कहा-

ष्जां जां दया न धर्मू तां तां बिकरम कर्मूष् अर्थात जिन मनुष्यों में छोटे प्राणियों के प्रति दया तथा अपने पूज्यों के प्रति श्रद्धा नहीं है वह धर्म विरूद्ध आचरण करता है।

दया की यह भावना मनुष्य ही नहीं बल्कि निरीह प्राणियों के लिए भी होना आवश्यक है। इसीलिए जिन पशुओं (बैलए बकरा) की उपयोगिता नहीं हैए उनके संरक्षण के लिए 29 नियमों में से दो नियम बनाये गये ताकि उनका वध न किया जा सके।

लोकमंगल और पर्यावरण को सुरक्षित रखने के उद्देश्य से भी गुरु जाम्भोजी ने स्पष्ट निर्देश दिए हैं-

ष्भल मूल सींचों रे प्राणी ज्यों तरवर मैलत डालूं।ष् अर्थात् अरे प्राणी! सुमूल को बल है- सींचो जिससे तुम्हारा वास्तविक कलयाण होए जैसे पेड़ों की जड़ में पानी देने से वह डाली व तनों को बढ़ाता है तथा पुनः बड़ा होकर फल देता है।

गुरु जाम्भोजी बताते हैं कि धन-दौलतए एश्वर्यपूर्ण जीवनए सैन्य समूह इत्यादि मायावी जगत् का मिथ्या आकर्षण है। इससे भ्रष्टाचारए अनैतिकता का प्रभाव समाज और राष्ट्र में अराजकता बढ़ा रहा है। उन्होंने मनुष्य की कुप्रवृत्तियोंए नशाखोरी व विलासिता के ऊपर अंकुश लगाया तथा सामाजिक समानता की स्थापना की। वे कहते हैं कि हमें दान देते समय भी पात्र-कुपात्र की जाँच कर लेनी चाहिए।

ष्कुपात्र के दान ज दीयो
जाणै रैण अंधेरी चोर जु वीयो
दान सुपाते बीज सुखेतीए
अमृत फल फलीजै।ष्

गुरु जाम्भोजी ने बाह्य आडम्बरोंए पाखंडोंए मूर्ति पूजा का खुलकर विरोध किया तथा मनुष्य के हृदय के सात्विक विचारों (दयाए कोमलताए क्षमाए सहनशीलता (धैर्य)) का पोषण किया। गुरु जाम्भोजी नारी सशक्तिकरण का भी पुरजोर समर्थन करते हैं। समाज क आधा भाग यदि शोषितए पीड़ित एवं उपेक्षित रह जायेगा तो समाज कभी भी उन्नति नहीं कर सकता। नारी तिरस्कार का विषय नहीं है बल्कि जहाँ-जहाँ पुरूष की विराप्ताए महानता व पौरूष का वर्णन हुआ हैए वहाँ-वहाँ नारी भी अपने गरिमामयीए महत्वमयी और सुदृढ़ छवि के साथ खड़ी दिखाई पड़ती है।

इस प्रकार मध्ययुग (15वी शताब्दी) में गुरु जाम्भोजी मानवता के अग्रदूत के रूप में खड़े दिखायी पड़ते हैं। कहा गया है कि जो काल से प्रभावित नहीं होगाए वही काल को बदलता है। गुरु जाम्भोजी समय की दिशा को मोड़ने वाले तथा मानवीय मूल्यों की स्थापना करने वाले वही काल विजेता थे क्योंकि वे कालजयी हैं इसीलिए उनके सिद्धांत आज भी प्रासंगिक और मानवता के पोषक हैं।

सन्दर्भ ग्रंथ सूची

1ण जम्भसागर रू टीकाकार कृष्णानन्द आचार्य

2ण भक्तिआंदोलन और सूरदास का काव्यरू मैनेजर पाण्डेय

3ण सूरदास रू ब्रजेश्वर वर्मा

4ण कबीर ग्रंथावली रू गोविन्द त्रिगुणायत

5ण त्रिवेणी (रामचन्द्र शुक्ल) रू संपादक कृष्णानंद

6ण सूर साहित्य रू आ० हजारी प्रसाद द्विवेदी

7ण नानक वाणी रू डॉ० रमेशचन्द्र मिश्र